PRESS INFORMATION BUREAU
पत्र सूचना कार्यालय
GOVERNMENT OF INDIA
भारत सरकार

Rashtriya Sahara, Delhi
Tuesday, 10th April 2018; Page: 16
Width: 47.58 cms; Height: 23.28 cms; a3r; ID: 37.2018-04-10.143

तेजी से लोकप्रिय हो रही है होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति

लखनऊ (वार्ता)। अंग्रेजी दवाओं के अत्यधिक इस्तेमाल से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव के विपरीत जटिल और असाध्य रोगों के लिए कारगर समरूपता के सिद्धांत पर आधारित होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के प्रति लोगों का भरोसा हाल के वर्षों में और मजबूत हुआ है।

होम्योपैथी चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए पूरे विश्व में दस अप्रैल होम्योपैथी दिवस के रूप में मनाया जाता है। चिकित्सकों के अनुसार करीब दो सदी पुरानी इस चिकित्सा पद्धति से इलाज कराने वाले मरीजों की तादाद पिछले एक दशक के दौरान 20 फीसदी तक बढ़ी है वहीं छात्रों में होम्योपैथी के प्रति बढ़ता क्रेज देश में इस चिकित्सा पद्धति के फलने फूलने का एक शुभ संकेत हैं। केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में हर सातवां मरीज होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति से इलाज करा रहा है। वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक ए के पांडेय कहते हैं कि कुछ आपात स्थितियों को छोड़कर करीब 80 फीसदी रोगों के इलाज के लिए होम्योपैथी कारगर है। एलोपैथी की तुलना में होम्योपैथी कम खर्चीली, सुलभ, सुरक्षित और प्रमाणिक चिकित्सा पद्धति है। त्वरित आराम देने वाली एलोपैथिक दवाइयों के साइड इफेक्ट भी कम नहीं हैं, जबकि होम्योपैथी लक्षणों पर निर्भर चिकित्सा पद्धति है और दवाइयों के दुष्प्रभाव भी न के बराबर हैं। चिकित्सक का अनुभव और मरीज का

होम्योपैथी दिवस पर विशेष

धैर्य से होम्योपैथी इलाज सुलभ और सटीक साबित होता है। पित्ती उभरना, हकलाहट, लीवर, किडनी और हृदय संबंधी समस्याओं का सटीक इलाज होम्योपैथी में संभव है।

इसके अलावा मनोरोग में होम्योपैथिक से उपचार एलोपैथिक अथवा आर्युवेद की तुलना में ज्यादा असरदार साबित होता है। उन्होंने कहा कि होम्योपैथी रोगों के नाम पर चिकित्सा नहीं करती। वास्तव में यह रोग से ग्रसित व्यक्ति के मानसिक, भावात्मक तथा शारीरिक आदि सभी पहलुओं की चिकित्सा करती है। मसलन अस्थमा के पांच रोगियों की होम्योपैथी में एक ही दवा से चिकित्सा नहीं की जा सकती। संपूर्ण लक्षण के आधार पर यह पांच रोगियों में अलग-अलग औषधियां निर्धारित की जा सकती हैं। अंग्रेजी दवाओं की कंपनियों को होम्योपैथिक चिकित्सा के प्रति साजिश रचने का आरोप लगाते हुए डॉ. बी एम दीक्षित ने कहा कि विदेशों में फार्मा कंपनियों ने साजिश के तहत होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति को मिटाने का काम किया। इसके खिलाफ एलोपैथिक दवा कंपनियों ने दुष्प्रचार किया। उनको लगने लगा था कि अगर होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति प्रचलित हो जाएगी तो उनका बाजार चौपट हो जाएगा। वही काम आज भारत की फार्मा कंपनियां कर रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी स्तर

> **केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में हर सातवां मरीज होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति से करा रहा इलाज**

पर भी होम्योपैथी चिकित्सा को बढ़ावा देने की जरूरत है। उत्तर प्रदेश के होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज शिक्षकों एवं अन्य संसाधनों की कमी से जूझ रहे हैं। उन्हें तत्काल भरा जाना चाहिए। होम्योपैथी के छात्रों का इंटर्नशिप भत्ता बढ़ाया जाना चाहिये। जिन क्षेत्रों में होम्योपैथी की लोकप्रियता है वहां सरकारी होम्योपैथिक अस्पताल खोले जाने चाहिए।

जाने माने होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. एस के श्रीवास्तव ने कहा कि होम्योपैथिक के प्रति मरीजों का बढ़ता आकर्षण ही है कि केवल लखनऊ में स्थित होम्योपैथी के 48 सरकारी सेंटर में हर रोज 2000 से अधिक मरीज वाय रोगी विभाग में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं वहीं जिले के विभिन्न स्थानों पर डेढ़ हजार से ज्यादा निजी डिस्पेंसरियों में औसतन 20 मरीज देखे जाते हैं। डॉ. श्रीवास्तव ने बताया कि होम्योपैथी के प्रति बढ़ते विश्वास के चलते होम्योपैथी दवाओं के कारोबार में भी 25 से 30 फीसदी का इजाफा हुआ है।

सस्ते और सटीक इलाज की वजह से समाज के गरीब तबके का रूझान भी होम्योपैथी इलाज को लेकर बढ़ा है। उन्होंने बताया कि पुराने और कठिन रोग की चिकित्सा के लिए रोगी और चिकित्सक दोनों के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। आज के युग में तनाव, चिंता अवसाद, इत्यादि आम समस्याएं बन गई हैं और लोगों को जिस तरह की जीवन शैली अपनानी पड़ती है वह इन समस्याओं को और बढ़ावा देता है।